विद्या भवन बालिका विद्यापीठ लखीसरालखीसराय

वर्ग दशम् विषय संस्कृत शिक्षक श्यामउदय सिंह

ता:-३०/०८/२०२०(एन. सी.ई.आर.टी.पर आधारित)

गद्यांश:

काक:- (सव्यङ्ग्यम्) अरे अहिभुक ! नृत्यातिरिक्तं का तव विशेषता यत् त्वां वनराजपदाय योग्यं मन्यामहे वयम्।

मयूर:- यत: मम नृत्यं तु प्रकृते: आराधना । पश्य !पश्य !म मम पिच्छानां अपूर्वं सौन्दर्यं ।

शब्दार्था:-

अहिभुक – सांप खाने वाला

पिच्छानां -पंखों की

अपूर्वं – अनोखी ।

सौंदर्यं -सुन्दरता को

अर्थ-

कौआ – (व्यङ्ग्य के साथ) अरे सांप खाने वाले ! नाचना के अतिरिक्त तुम्हारी क्या विशेषता है कि तुमको वनराज के

पद के लिए हम सब योग्य मान लें।

मोर – क्योंकि मेरा नृत्य तो प्रकृति की आराधना है । देखो! देखो! मेरे पंखों की अनोखी सुन्दरता को।